International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-08-2020; Accepted: 10-09-2020; Published: 26-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 42-43

प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न

चन्दीर पासवान
शाधार्थी (हिन्दी), ल0न0मि0वि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
हिन्दी कथासाहित्य के क्षेत्र में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे प्रेमचन्द नाम पता न हो वैसे प्रेमचन्द से भारत का बच्चा–बच्चा परिचित है और हो भी न क्यों न वे अपने रचना का अधार गाँव–समाज में रह रहे सभी वर्गों के लोगों को अपने रचना का विषय बनाया है। प्रेमचन्द युग–प्रवर्तक रचनाकार है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन समाज का दर्शन है। वे साहित्य के उद्देश्य परक मानते थे।

मूल शब्द: प्रेमचन्द, कथासाहित्य, तत्कालीन, स्त्री

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द जी प्रवेश कर साहित्य का काया पलट कर दी। उसने एक नया मोड़ दिया। वे पहला उपन्यासकार थे, जिन्होंने उपन्यास साहित्य को तिलिस्मी, ऐयारी और मनोरंजन से बाहर निकालकर उसे वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया। यथार्थवाद की प्रवृति के साथ प्रेमचन्दजी हिन्दी साहित्य के उपन्यास का पूर्ण और परिष्कृत स्वरूप लेकर आये। वे समय की सच्चाई को भली–भाँति पहचानते थे।

समय–सीमा के रूप में अगर कहा जाय तो सन् 1916–1945 के काल को प्रेमचन्द युग कहा जाता है। उनका रचनाकाल राष्ट्रीय आन्दोलन का था। इसी लिए स्वाभाविक रूप से उनकी रचनाओं में राष्ट्रोद्धार वे एक सच्चे समाज–सुधरक तथा क्रांतिकारी लेखक थे। नारी के प्रति उनके मन में स्वाभाविक श्रद्धा थीं समाज में उपेक्षिता, अपमानित और पतिता नारियों के प्रति उनका हृदय सहानुभूति से परिपूर्ण रहा है। प्रेमचन्द जी स्त्री स्वतंत्रता के पूर्ण समर्थक हैं। नारी अस्तित्व को मजबूत बनाने के लिए प्रेमचन्द जी उसे पुरी तरह से शिक्षित करना चाहते थे। वे शिक्षा के साथ–साथ कानूनी अधिकार भी नारी को दिलाना चाहते थे। उनका मानना था कि नारी का पूर्ण विकास तभी संभव है, जब उसे पुरूस के समान ही अधिकार प्राप्त हों। कानूनी अधिकारों के बिना पुरूष समाज उसे ढगता जाऐगा। 'गोदान' उपन्यास में नगर की नारी के उत्थान में विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने जो–जो कार्य किये उसके लिए प्रेमचन्दजी हृदय से आभारी हैं। उनका कहना यह भी है कि आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने आर्य समाज का प्रचार करके नारियों और समाज का बड़ा उद्धार किया है।

प्रेमचन्दजी का मानना था कि सृष्टि की रचना में नारी–पुरूष दोनों का समान महत्व हैं दानों एक दूसरे पर निर्भर होते हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। पुरूष के जीवन में नारी की सामीप्य को महत्व देते हुए व कहते हैं कि नारी के अभाव में पति की दुर्गति है। इस विचार को प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में भोला के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भोला पत्नी के अभावजन्य कष्टों के अनुभव के बाद ही होरी से कहता है– "मेरा तो घर उजड़ गया, यहाँ तो एक लोटा पानी देने वाला नहीं है।" इस प्रकार प्रेमचन्द जी पत्नी की महानता को स्वीकार करते हैं क्योंकि उसके अभाव में जीवन का अलौकिक आनंद नहीं मिल सकता है।

इतना ही नहीं प्रेमचन्दजी नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरना भी देते हैं। इतना ही नहीं प्रेमचन्दजी नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की प्रेरना भी देते हैं। 'गवन' उपन्यास में पंडित इन्द्रभूषण की मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे मणिभूषण ने उनके रूपये–पैसे अपने नाम करवा लिये, बंगला बेच दिया, नौकड़ों की छुट्टी कर दी और बेचारी विधवा रत्न को रहने के लिए जब ग्यारह सौ रूपयें का मकान तय किया तो उसकी आँखे खुली और कहा– "मैं अपनी पर्यादा की रक्षा स्यवं कर सकती हूँ, तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है।" इसके माध्यम से प्रेमचन्दजी कहना चाहते हैं कि नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना है, क्योंकि अधिकारहीन नारी के प्रति प्रेमचन्दजी पर्याप्त दयावान हैं।

प्रेमचन्दजी निम्न वर्ग की नारियों के दयनीय स्थिति का वर्णन अपने उपन्यासों में किया है इसी का एक चित्र 'कफन' कहानी में देख सकते हैं। झोपड़ी के भीतर बुधिया प्रस्व–वेदना से कराह रही है पर बाप–बेटे घिसू और माधव दोनों इस आशंका से अलाव के पास से नहीं हिलत कि कहीं दूसरा आलू न खा जाये। स्थिति–परिस्थिति कैसी भले क्यों ने हो इसमें शोषण का शिकार नारी ही होती है। बुधिया माधव से विवाह होने के पश्चात् घर को संभालती है, उन दोनों का पेट पालती है। वही स्त्री जब तड़पती रहती है प्रसव–पीड़ा से तड़पती है तो पुरूष उसकी ओर देखता तक भी नहीं है। बल्कि उसके मरने तक इंतजार करके मरने के बाद भी दाह संस्कार के नाम पर लोगों से रूपया–पैसा वसूल करता है तथा उसी पैसे से पासिखाना में जारकर ताड़ी और चखना खुब पीता–खाता है और खाने बाद बचा हुआ दूसरे भीखारी को देकर कहता कि ले उनके नाम पर तू भी खाले और उनको आशीष दें उसकी आत्मा को शांति मिले। इस प्रकार निम्न वर्ग की नारी परिश्रमी होने के बावजूद भी साधनहीन होती है। अपनी अभावमयता के कारण इस वर्ग की नारी को अत्यंत दयनीय जीवन बिताना पड़ता है।

जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के अभाव में उनका स्वास्थ भी चिंताजनक होता है। सब ओर से इसका शोषण होता ही रहता है।

प्रेमचन्दजी ने 'कफन' कहानी के द्वारा निम्न वर्ग की स्त्री की दूःखद स्थिति को दिखाने के साथ–साथ किसान, मजदूर, अशिक्षित वर्ग की आर्थिक दुर्यव्यवस्था को स्पष्ट रूप से दिखया है। प्रेमचन्द अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में जैसे 'सेवासदन', 'निर्मला', 'गोदान' आदि के मध्यम की वर्ग की नारी की दुविधा भरी परिस्थितियों का चित्रण किया है। जहाँ तक आर्थिक स्थिति की बात है तो मध्यम वर्ग की स्थिति अत्यंत विडम्बनापूर्ण होती है। इस वर्ग की नारी आडम्बनाप्रिय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति अत्यधिक सचेत होने से इसकी आमदनी आवश्यकता से कम पड़ जाती है। उसका मन उच्च वर्ग के प्रति आकर्षित होता है और वह उसको पाने के लिए भयंकर कष्ट झेल लेती है।

वेश्यावृति, अनमेल–विवाह, दहेज–प्रथा का मार्मिक चित्रण किया है प्रेमचन्द सामाजिक समस्याओं का अपने साहित्य में वखूबी दर्शाया है। 'सेवासदन' में सुमन आकांक्षी स्त्री है, दहेतज के कमी के कारण उसका विवाह गरीब गजाधर से कर दिया जाता है। जिससे असंतुष्ट सुमन द्वारा वेश्यावृति अपनाने का मार्मिक वर्णन इस उपन्यास से मिलता है। इसमें भारतीय नारी का घृणित रूप वेश्या और उसकी सच्चाइयों का उद्घाटन किया गया है। 'निर्मला' उपन्यास में दहेज न दे पाने कारण उसका विवाह पिता के उम्र के पुरूष तोताराम से कर दिया जाता है। निर्मला की उम्र 15 वर्ष की थी तोताराम उम्र लगभग 40 वर्ष का था। तोताराम उसे रिझाने की कोशिश करता है, लेकिन निर्मला उससे हँसने–बालने में संकोच करती है। उधर निर्मला का अर्न्तमन जब वह वस्त्र और गहनों से सुसज्जीत होकर आइने के समक्ष खड़ी होती है तो अपना सौन्दर्य देखकर उसका हृदय संतप्त कामना से तरप उठता है।

नारी की विविध समस्याएँ तथा रूपों का दर्शन कराते हुए प्रेमचन्दजी ने अपने साहित्य में नारी का जागरूक व्यक्तित्व, ममता भरी जिन्दगी, सेवा तथा गरीमामय व्यक्तित्व का भी परिचय दिया है। 'पुस की राज' कहनी में मुन्नी पहले ही हल्कू को सचेत करती है कम्बल के लिए जो रूपया रखें हुए थे वे अपनी पत्नी मुन्नी से लेकर दूसरे के द्वारा होने वाली बेज्जती से बचने के भय से शोषक को दे देता है। परिणाम स्वरूप हल्कू पूस की रात में भयंकर सर्दी को बिना कंबल के सहना पड़ता है।

'माता का हृदय' कहानी में प्रेमचन्दजी ने माँ की ममता को प्रकट किया है। माधवी अपने बेटे आत्मानंद का बदला लेने के लिए मिस्टर बागजी के बँगले में काम करने लगती है। किन्तु उस परिवार में घुल मिल जाती है। बागजी के बेटे को अपना ही बेटा मानकर प्यार करने लग जाती है। ऐसा लगता है कि वह रूलाने आयी थी परन्तु वह खुद रोती जा रही थी। सममुच माता का हृदय दया का एक सागर है उससे दया की ही सुगन्ध निकलती माता के हृदय रूपी चन्दन को चाहे जलाव चाहे पिसों चाहे जो भी करों उस हर स्थिति में सुगन्ध ही निकलेगा अतः वह देवी है। नारी के गरीमा व्यक्कित्व को प्रेमचन्द में 'बड़े घर की बेटी' कहानी के द्वारा दिखाने का प्रयास किया। आनंदी बड़े घर की बेटी होने के बावजूद भी पती के अभावग्रस्त परिवार में अपने आप को ऐसे ढक लेती है कि जैसे वह सुख के दिन ही न देखे हो परन्तु देवर के कर्कश अवाज के कारण दुखी होती है उसका देवर उसकी मायके का निंदा करता है और खड़ाऊ उठाकर फेंकता है। लेकिन जब उसे अनुभव होता कि उसका परिवार टुट रहा है और उसका देवर पश्चाताप से भरा है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत कर देती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचन्दजी अपने साहित्य में एक ओर युग का सच्चाई चित्रित करते हैं तो दूसरी ओर प्रेम, तपस्या, सेवा, सहानुभूति आदि मूल्यों का जोरदार समर्थन करती है। नारी कष्टों को सहकर मैले–कुचैले, पुराने वस्त्र पहनकर आभुषण हीन होकर आधी पेट सुखी रोटी खाकर, झापड़ी में रहकर, मजदूरी–मेहनत कर सब कष्टों को सह कर भी आनंद से अपना जीवन बिताती है परन्तु तभी जब उसे समाज में सम्मान आदर मिले, परिवार को पतिष्ठा मिले। प्रेमचन्दजी ने अपने जीवनकाल में अनुभव किया कि नारी धन की नहीं बल्कि वह पति के प्रेम की भुखी है। कथा सम्राट प्रेमचन्द के अनुसार नारी जीवन की चरण शांति भारतीय आदशों में ही मिली है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। वे नारी का प्रेम की शक्ति का रूप मानते हैं। वे नारी के अन्दर बलिदान, त्याग, सेवा प्रगतिशीलता, कर्तव्यपरायंता, ममता, ज्ञान, पवित्रता आदि उदार भावों को दिखाना चाहते हैं। उनका मानना है कि यदि नारी इन गुणों को धारण करेगी तभी वह समाज और राष्ट्र के स्वरूप विकास में सहयोग कर सकती है। नारी के प्रति इनका दृष्किोण सबसे अधिक प्रासंग है। 19वीं सदी में नारी की स्थिति को सुधारने में और नारी सशक्तिकरण में प्रेमचन्दजी के साहित्य का बड़ा योगदान है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का उपन्यास का उद्भव और विकास – डॉ0 गोपाल राय, वाणि प्रकाशन, दिल्ली, 2001 ई0
2. हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्र – गरीमा श्रीवास्तव, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1987 ई0
3. हिन्दी साहित्या का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973 ई0
4. हिन्दी गद्य–साहित्य – डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारानसी, 1986 ई0
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, राधकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996 ई0